जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 27 संख्याः 102 प्रभात अजमेर, शुक्रवार 11 नवम्बर, 2022 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

वैज्ञानिकों ने अंततः "एलियन गोल्ड फिश" नाम के विचित्र समुद्री जीव के रहस्य से पर्दा उठा दिया है। कई दशकों से वैज्ञानिक इसे लेकर अचंभित हैं, जिसके ना तो रीढ़ की हड्डी है ना ही गुदा, ना आँखें और ना ही शैल। टायफ्लोसस वैलसी नामक यह जीव जब से दिखाई दिया है तब से वैज्ञानिक उद्विकास व्यवस्था में इसके संबंधी ढूंढ रहे हैं। बायॉलजी लैटर्स में छपे एक नए शोध के अनुसार, रॉयल ओन्टारियो म्यूज़ियम के क्यूरेटर जीन-बर्नार्ड कैरॉन को इस जीव की आंतों में दांतों जैसी एक संरचना मिली है, जिससे लगता है कि यह जीव मॉलस्क (शैल वाले जीव, जैसे घोंघा, सीप आदि) वर्ग का हो सकता है। आधुनिक मॉलस्क जीवों की आंतों में भी ऐसी ही दांत युक्त संरचना मिलती है जिसे "रैडुला" कहते हैं और जिसका इस्तेमाल ये जीव खाने के लिए करते हैं। कैरॉन और उनके सहयोगी मॉरिस को इस जीव के स्पैसिमैन्स का अध्ययन करते समय उक्त संरचना नज़र आई, जो करीब 4 मिलीमीटर लंबी है तथा जिसमें 20 तिकोने दांतों की दो पंक्तियाँ हैं। पूर्व में इस संरचना को टिशू मसल समझ लिया गया था क्योंकि यह जीव की आंतों में थी। शोधकर्ताओं ने कहा, हो सकता है कि, एलियन गोल्ड फिश अपनी दांत युक्त जीभ बाहर निकाल कर शिकार पकड़ती हैं, गिरगिट की तरह। टायफ्लोसस वैल्सी तकरीबन 330 मिलियन वर्ष पुराना जीव है। इसके अवशेष मोन्टाना में 1960 के दशक में मिले और 1973 में इन्हें वर्णित किया गया। पूर्व में शोधकर्ताओं ने, कुछ एलियन गोल्ड फिश जीवाश्मों में नन्हें-नन्हें दांतों की पहचान की थी। इसकी वजह से उन्हें लगा कि यह कोनेडॉन्ट नाम की विलुप्त ईल जैसी कोई मछली है। पर बारीकी से देखने पर यह थ्योरी गलत साबित हुई क्योंकि पता चला कि टायफ्लोसस वैलसी ने जो अंतिम भोजन किया था, ये उसके अवशेष थे। अब इस जीव के "रैडुला" से एक नया व निर्णायक सुराग मिला है। अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के क्रिस्ट्रोफर वालैन का कहना है, "जैसे वर्टिब्रेट्स (कशेरूकी) जीवों के रीढ़ की हड्डी होती है वैसे ही मॉलस्क वर्ग के सभी जीवों में रैडुला होता है।" लेकिन युनिवर्सिटी ऑफ लैस्टर के मार्क पर्नेल ने कहा कि, यह जीव मॉलस्क वर्ग का है या नहीं, यह तय करने के लिए और रिसर्च की जरूरत है।

राहुल गांधी का राजनीतिक व्यक्तित्व भी प्रखर हो रहा है, "भारत जोड़ो यात्रा" से

यह भी सच है कि, मुख्यधारा के मीडिया संस्थानों द्वारा यात्रा की अनदेखी के बावजूद यात्रा को अच्छा जन समर्थन मिल रहा है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। कन्या कुमारी से गत 7 सितम्बर को शुरू हुई पूर्व, कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने तीन दिन पूर्व नांदेड़ से महाराष्ट्र में प्रवेश किया। कल इसमें नैशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.) प्रमुख शरद पवार और महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री आदित्य ठाकरे भाग लेंगे।

इन दोनों नेताओं की उपस्थिति इस तथ्य को रेखांकित करती है कि लोकसभा के 48 सांसद निर्वाचित करने वाले महाराष्ट्र की उथल-पुथल भरी राजनीति के गाढ़े वक्त में महाविकास अगाड़ी के सहयोगी दल एकजुट रहेंगे।

यह सच है कि कांग्रेस बार-बार यह कहते हुए नहीं थक रही है कि भारत जोड़ो यात्रा एक राजनीतिक उद्यम नहीं है, बल्कि यह देश को एकजुट करने का एक मिशन है क्योंकि देश आर.एस.एस. समर्थन वाली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भाजपा सरकार द्वारा धर्म के आधार पर नष्ट किए जाने की चुनौती का सामना कर रहा है। वास्तविकता यह है कि कश्मीर में अगले वर्ष समाप्त होने जा रही 3 हजार 570 किमी. लम्बी यह यात्रा निः सन्देह देश के राजनीतिक पारिदृश्य में बदलाव करेगी। ये बदलाव देश के किस हिस्से में किस हद तक होंगे, ये वे प्रश्न हैं जिनके उत्तर वर्ष 2024 में तभी मिल पांएगे, जब आम चुनावों के परिणामों की घोषणा होगी।

- साधारण जनता से उनके बातचीत करने के सरल तरीके से उनके लिये सद्भावना बढ़ी है। तथा, शरद पवार व आदित्य ठाकरे के यात्रा में भाग लेने की खबरों से नई ताज़गी आयी है यात्रा में।
- इन नेताओं के जुड़ने से यह मैसेज भी गया है कि, महाराष्ट्र अगाड़ी गठबंधन के घटक, महाराष्ट्र की राजनीति में साथ ही रहेंगे।

केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और तेलंगाना के हिस्सों में पहले ही गुजर चुकी यह यात्रा महाराष्ट्र में अगले 12 दिन तक रहेगी। आगामी 20 नवम्बर को मध्य प्रदेश में प्रवेश करने से पूर्व यात्रा महाराष्ट्र के पांच जिलों के 15 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों और 6 लोकप्रिय क्षेत्रों में से होकर गुजरेगी।

कांग्रेस ने अपने एक पूर्व बयान में दावा किया था कि किसी भारतीय राजनेता द्वारा पैदल की जाने वाली यह भारत के इतिहास की सबसे लम्बी यात्रा है।

राष्ट्रीय मीडिया द्वारा इसकी अनदेखी किए जाने के बावजूद इसे मिला जनता और सोशल मीडिया का भारी समर्थन यह संकेत देता है कि इसे देश के सामान्य जन का समर्थन मिल रहा है। इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न राजनीतिक पार्टियां और देशभर के सामाजिक संगठन इसमें शामिल हो रहे हैं और इसका समर्थन दिन-प्रति-दिन बढ़ रहा है।

राहुल गांधी जो कि लोगों के साथ बातचीत कर रहे हैं, और जनता के साथ घुलमिल रहे हैं, लगता है कि यात्रा के साथ ही उनका व्यक्तित्व भी प्रखर हो रहा है, क्योंकि जो लोग यात्रा में भाग लेने के लिए आ रहे हैं या उन्हें देखने के लिए आ रहे हैं, उनके साथ उनका भावनात्मक जुड़ाव हो रहा है। यह आज तब स्पष्ट हो गया, जब उन्होंने अपने माइक्रोफोन को ऑफ और ऑन किया। वह यह हकीकत को बताना चाहते थे कि जब विपक्ष के नेता भाजपा सरकार को पसन्द ना आने वाले किसी विषय पर बोलते हैं, तब संसद में कथित रूप से क्या होता है।

उन्होंने कहा "देखिए, वे लोग क्या करते हैं। नोटबंदी (2016) के बारे में हमने जब कभी भी बोला, इस तरह से माइक ऑफ! हो जाता है।" इस दौरान एक पल को उनकी आवाज बंद हो गई।

फिर उन्होंने मुस्कराते हुये माइक को फिर से स्विच ऑन किया तथा हिन्दी में बोले: "यहाँ, नियन्त्रण मेरे हाथ में है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कौन से मुद्दे कामयाब होंगे हिमाचल में, स्थानीय या राष्ट्रीय?

भाजपा राष्ट्रीय स्तर की अपनी सफलताएं, जैसे राम मंदिर का निर्माण, अनुच्छेद 370 को वापस लेना, तथा यूनिफॉर्म सिविल कोड लागू करने का वादा दोहरा रही है

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। चुनाव-विशेषज्ञों का कहना है कि शनिवार को 68 सदस्यीय हिमाचल विधान सभा के लिये होने वाले मतदान में, भाजपा का "टॉप डाउन" तरीका कांग्रेस के "ग्राउन्ड्स अप" तरीके को मात दे देगा। अपने प्रचार में, भाजपा प्रत्यक्ष एंव परोक्ष रूप में "डबल इंजन" सरकार के लाभ बताती रही है तथा अनुच्छेद 370 को समाप्त करना, राममन्दिर निर्माण तथा समान नागरिक संहिता लागू करने करने का वादा जैसे राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी उपलब्धियों को गिनाती रही है। दूसरी तरफ कांग्रेस विभिन्न स्थानीय मुद्दों को उठाती रही है, जैसे-बढ़ती बेरोजगारी, दिन दूरी-रात चौगुनी बढ़ती जा रही महँगाई, पुलिस तथा शिक्षक भर्ती, तथा कोरोना महामारी की चरम स्थिति में राज्य सरकार द्वारा की गई पी.पी.ई.किट्स की खरीद में कथित रूप से हुई अनियमितताओं की पृष्ठभूमि में भ्रष्टाचार के आरोप। कांग्रेस नेता यह वादा भी कर रहे हैं कि अगर मतदान के बाद कांग्रेस सत्ता में आती है तो पुरानी पेंशन स्कीम फिर से लागू कर दी जायेगी।

- पर, कांग्रेस स्थानीय मुद्दे, जैसे बढ़ती बेरोज़गारी, बढ़ती महंगाई, पुलिस व अध्यापकों की नियुक्ति में हुए भ्रष्टाचार पर जोर दे रही है।
- अधिकतर मीडिया ग्रुप्स द्वारा किये गये सर्वे 45 से 46 प्रतिशत वोट भाजपा को तथा, 41 से 42 प्रतिशत मत कांग्रेस को मिलने की बात कर रहे हैं।
- पर, सभी सर्वे केजरीवाल की पार्टी को नगण्य, लगभग दो प्रतिशत वोट शेयर मिलने का हिसाब बता रहे हैं।
- भाजपा प्र.मंत्री मोदी, महिलाओं का भारी समर्थन मिलने के प्रति आशान्वित हैं, जिससे हिमाचल की एक बार भाजपा, दूसरी बार कांग्रेस के जीतने की परम्परा टूटेगी इस बार।

जहाँ तक जनमत सर्वेक्षणों पोलों का सम्बन्ध है, "बदलाव में विश्वास रखने वाला हिमाचल" पुरानी परम्परा को नकारने तथा 37-45 सीटों या तकरीबन 45 प्रतिशत वोटों के साथ भाजपा को फिर से सत्ता में लाने के लिये पूरी तरह तैयार बताया जा रहा है। "रिपब्लिक टी.वी.-पी. मार्क" सर्वे की भविष्यवाणी है कि कांग्रेस 22-28 सीटें या 41 प्रतिशत वोट शेयर हासिल करेगी तथा इस प्रकार, उसके 2017 के प्रदर्शन कुछ वृद्धि होगी।

अन्य पोल- सर्वेक्षणों की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रियंका की अग्नि परीक्षा हिमाचल के चुनाव

-डा. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। हिमाचल प्रदेश में आज प्रचार समाप्त हो गया। 9 दिसम्बर को आने वाले हिमाचल विधान सभा को चुनावों के परिणाम कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के लिये एक अग्नी परीक्षा माने जायेंगे क्योंकि उन्होंने यहाँ पार्टी के प्रचार-अभियान

- हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव प्रियंका के लिए अग्नि परीक्षा इसलिए माने जाएंगे क्योंकि इस बार ना तो सोनिया गांधी ने प्रचार में भाग लिया ना ही राहुल गांधी ने। साथ ही यह भी कहा जा रहा है कि, प्रियंका ने स्थानीय समस्याओं को बहुत अच्छी तरह उठाया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या राजस्थान में मु.मंत्री की सरकार पर पकड़ ढीली होती जा रही है?

एक-एक करके पुराने वफादार साथ छोड़ते जा रहे हैं? पहले खाचरियावास प्रशासन के खिलाफ बोले, अब हरीश चौधरी ने मु.मंत्री की खिलाफत करने वालों में अपना नाम जोड़ा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। राजस्थान सरकार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के हाथों से खिसक रही है।

उनके प्रति निष्ठा रखने वाले लोग की अब उनके खिलाफ हो गये हैं। इस समय चल रही हवा में प्रताप खाचरियावास के बाद, अब हरीश चौधरी भी शामिल हो गये हैं, जो अशोक गहलोत के प्रति जबरदस्त निष्ठावान थे।

हरीश चौधरी ने एक ट्वीट में ओ.बी.सी. मुद्दों पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर सीधे निशाना साधा है उनका कहना है कि वे इस मुद्दे के लिये अन्त तक संघर्ष करेंगे।

चौधरी ने ट्वीट किया है: "ओ.बी.सी. आरक्षण विसंगति के मामले को कल केबिनेट बैठक में रखने के बावजूद, एक विचारधारा विशेष के द्वारा इसका विरोध चौंकाने वाला हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी, मैं स्तब्ध हूँ, आखिर क्या चाहते हैं आप? मैं ओ.बी.सी. वर्ग को विश्वास दिलाता हूँ कि इस मामले को लेकर जो लड़ाई लड़नी पड़ेगी, लड़ूँगा।"

- कांग्रेस विधायकों व मंत्रियों में यह भावना जोर पकड़ती जा रही है कि, गहलोत के नेतृत्व में उनका भविष्य अंधकारमय है।
- स्थिति बद से बदतर होती जा रही है, और अब वरिष्ठ नेता, एक दूसरे पर निशाना साध रहे हैं, तथा शाब्दिक व वर्चुअल मुक्केबाजी कर रहे हैं।
- परन्तु, गहलोत का ध्यान पूर्णतया अपनी कुर्सी बचाने पर ही केन्द्रित है।

गहलोत सरकार के मन्त्री निजी तौर पर मुख्यमंत्री से प्रश्न कर रहे है तथा यह मान रहे हैं कि वे (गहलोत) राज्य के मामले पर अपनी पकड़ खोते जा रहे हैं तथा अब अधिकांश कांग्रेसजनों का मानना है कि उनके नेतृत्व के तहत,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दुष्कर्मी राष्ट्रीय खिलाड़ी को सजा

जयपुर, 10 नवंबर (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-2 महानगर द्वितीय ने नाबालिग के साथ कई बार दुष्कर्म करने वाले ताइक्वांडों के राष्ट्रीय खिलाड़ी मोहित ढेला को बीस साल की कैद की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख पांच हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने अपने आदेश में यह भी कहा कि नाबालिग की सहमति कानून में कोई महत्व नहीं रखती है। अभियोजन पक्ष की ओर से अदालत को बताया गया कि

- पॉक्सो कोर्ट ने नाबालिग के साथ कई बार दुष्कर्म करने वाले नैशनल ताइक्वांडो खिलाड़ी मोहित ढेला को 20 साल की सजा सुनाई और कहा कि, नाबालिग की मर्ज़ी मायने नहीं रखती है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय मूल के अमरीकी नागरिकों को उत्साहवर्धक सफलता मिली अमेरिका के चुनाव में

पांच भारतीय मूल के व्यक्ति, राजा कृष्णमूर्ति, रो खन्ना, प्रमिला जयपाल व अमि बेड़ा अमेरिका के हाउस ऑफ रिप्रैज़ैन्टेटिव्स के सदस्य बने

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। अमेरिका के कारोबार और अर्थव्यवस्था में अपना योगदान हो या राजनीतिक प्रचार मुहिमों के लिए भारी फंडिंग अथवा कड़े चुनावी मुकाबले में मतदाताओं का रूझान बदलने की क्षमता हो, भारतीय मूल के लोग अमेरिका में छाए हुए हैं। हाल ही के घटनाक्रमों से स्पष्ट होता जा रहा है कि राजनीतिक वर्ग अब उनकी आवाज को बेहतर तरीके से सुनेगा।

अमेरिका के सर्वाधिक ध्रुवीकृत माने गए मध्यावधि चुनावों में सत्तारूढ़ डैमोक्रेटिव पार्टी के इण्डियन अमेरिकन पांच रिकॉर्ड सीनेटर जीते हैं। इनमें राजा कृष्णमूर्ति, रो खन्ना, प्रमिला जयपाल और अमि बेड़ा शामिल हैं जो अमेरिका के हाउस ऑफ रिप्रैजेन्टेटिव्स के लिए चुने गऐ हैं, जबकि कई अन्य राज्य विधानसभाओं में निर्वाचित हुए हैं।

कारोबारी से राजनेता बनने एवं डैमोक्रेटिक पार्टी के इण्डियन-अमेरिकन प्रत्याशी थानेदार, मिशिगन से कांग्रेस का चुनाव जीतने वाले प्रथम इण्डियन अमेरिकन बने हैं। उन्होंने रिपब्लिकन प्रत्याशी मार्टेल विविंग्स को मात दिकाई। थानेदार (67 वर्ष) वर्तमान में मिशिगन हाउस के थर्ड डिस्ट्रिक्ट निर्वाचित क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारतीय- अमेरिकन उम्मेदवारों ने राज्य विधानसभाओं के लिए भी जीत दर्ज की। मैरीलैण्ड में अरूणा मिलर लैफ्टिनैंट गवर्नर की चुनावी रेस जीतने वाली प्रथम इण्डियन, अमेरिकन राजनेता बन गई है। मैरीलैण्ड हाउस की पूर्व प्रतिनिधि एवं 58 वर्षीया मिलर लैफ्टिनैंट गवर्नर पद के लिए डैमोक्रेट उम्मीदवार थीं, उनके सामने वेस मूक थे, जो हार गए, लेकिन इण्डियन-अमेरिकन संदीप श्रीवास्तव टैक्सास की थर्ड कांग्रेस डिस्ट्रिक्ट में कीथ थर्ड कांग्रेस डिस्ट्रिक्ट में कीथ सेल्फ के सामने चुनाव हार गए। कीथ कॉलिन काउन्टी के पूर्व जज हैं।

मध्यावधि चुनाव देश के आगे की दिशा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालेंगे और साथ ही उस व्यक्ति और पार्टी के भाग्य

- इण्डियन अमेरिकन्स ने कई राज्य की विधानसभाओं के चुनाव भी जीते।
- हालांकि, इण्डो-अमेरिकी, अमेरिका की जनसंख्या का लगभग एक प्रतिशत हिस्सा ही हैं, पर, वे अमेरिका के सबसे अमीर अल्पसंख्यक हैं, जिनकी औसत आय एक लाख डॉलर है, जो कि, अमेरिका के आम नागरिक की औसत आय से दुगनी है। तथा, इण्डो अमेरिकी, मुक्त हस्त से दोनों पार्टियों, डैमोक्रेटिक पार्टी व रिपब्लिकन पार्टी, को आर्थिक सहयोग देते हैं।
- चाहे, अपने भारी आर्थिक सहयोग व फण्डिंग के कारण, या कांटे की टक्कर वाली सीटों पर अपनी संगठित वोटिंग के कारण चुनाव का नतीजा बदलने की क्षमता के कारण, पर, यह सच है कि, इण्डो अमेरिकियों की इस चुनाव में भारी उत्साहवर्धक सफलता, अब मजबूर कर देगी अमेरिका के राजनीतिज्ञों को इस समूह को और गंभीरता से सुनने के लिए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाली के पूर्व चेयरमैन के भाई बैंक डिफॉल्टर

पाली, 10 नवम्बर (नि.सं.)। पाली शहर के आदर्शनगर में स्थित पूर्व सभापति के भाई का मकान को सीज करने के लिए बैंक स्टॉफ के साथ पुलिस पहुंची। लेकिन कोर्ट का स्टे होने के चलते इन्हें वापस लौटना पड़ा।

- पाली के पूर्व चेयरमैन केवलचंद गुलेच्छा के भाई ने नोटिस के बाद भी बैंक का 4.50 करोड़ रू. का बकाया नहीं चुकाया है। बैंक ने उनका मकान सीज करने का आदेश जारी किया लेकिन कोर्ट स्टे के कारण ऐसा नहीं हो सका।

पाली नगर परिषद के पूर्व सभापति केवलचंद गुलेच्छा के भाई रमेश गुलेच्छा का गुरुवार को मकान सीज किया गया। साढ़े 4 करोड़ रुपए बकाया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)